SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

महाश्वेता देवी का साहित्य और अनुवाद

सुरेखा जवादे, (Ph.D.), हिन्दी विभाग,
सेन्ट थॉमस कॉलेज, भिलाई, जिला– दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
सुरेखा जवादे, (Ph.D.), हिन्दी विभाग,
सेन्ट थॉमस कॉलेज, भिलाई, जिला– दुर्ग,
छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 13/02/2021
Revised on : -----
Accepted on : 20/02/2021
Plagiarism : 00% on 13/02/2021

शोध सार

अनुवाद विचारों के आदान–प्रदान करने की वह शैली है जो ज्ञान रूपी प्रकाश को सम्पूर्ण विश्व के कोने–कोने तक पहुंचा सकती है। अनुवाद शैली की उपलब्धता के कारण ज्ञान सीमित सीमाओं तक नहीं रह गया है। इसी के माध्यम से लोगों के विचार जन–जन तक पहुंच पा रहे है। लेख–आलेख, रचनाएं, कविताएं हर वर्ग की पहुंच तक है और अनुवाद के कारण ही बंगला साहित्यकार महाश्वेता देवी जैसी महान रचनाकार की रचनायें, उपन्यास, कवितायें,लेख जन–जन तक पहुंच चुकी है। अनुवाद भाषा कि एक महत्वपूर्ण कड़ी है, यदि वह ज्ञान या साहित्य के लिए सागर है तो अनुवाद उस सागर में उठने वाली लहर के समान है।

मुख्य शब्द

उपलब्धता, संस्कृति, शोषित, महिला उत्पीड़न, फिल्म जगत, साहित्य.

अनुवाद भाषा का वह विस्तारित रूप है, जिसके माध्यम से विशिष्ट संदेशो को आमजनों तक आसानी से सरल एवं स्पष्ट रूप से पहुंचाया जा सकता है। अनुवाद विचारों के आदान–प्रदान करने की वह शैली है जो ज्ञान रूपी प्रकाश को सम्पूर्ण विश्व के कोने–कोने तक पहुंचा सकती है। अनुवाद शैली की उपलब्धता के कारण ज्ञान सीमित सीमाओं तक नहीं रह गया है। इसी के माध्यम से लोगों के विचार जन–जन तक पहुंच पा रहे है। लेख–आलेख, रचनाएं, कविताएं हर वर्ग की पहुंच तक है और अनुवाद के कारण ही बंगला साहित्यकार महाश्वेता देवी जैसी महान रचनाकार की रचनायें, उपन्यास, कवितायें,लेख जन–जन तक पहुंच चुकी है। यह क्रम आज भी जारी है। उनकी बंगला भाषा में रचित रचनायें न सिर्फ अन्तर्राष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी में, राष्ट्रीय भाषा हिन्दी में ही नहीं अपितु स्थानीय भाषा मलयालम, कन्नड,

मराठी आदि भाषाओं में भी अनुदित है। बंगला साहित्य का विकास तथा अनुवाद दोनों ही हिन्दी साहित्य की तुलना में थोड़े समय पहले हुआ। 19 वीं शताब्दी के आसपास अंग्रेजी तथा संस्कृत कथा साहित्य की पूरी छाप मिलती है। कहानीकारों ने बंगला कहानियों से पूरी प्रेरणा ग्रहण की है। सन् 1900 ई. में हिन्दी कहानियाँ प्रकाशित हुई तो बंगला कहानियों के हिन्दी अनुवाद भी हिन्दी पाठकों के समक्ष आने लगे।

बंगाल की प्रख्यात लेखिका महाश्वेता देवी का नाम स्मरण होते ही उनकी कई–कई छवियां आँखों के समक्ष प्रकट हो जाती है। इन छवियों में साहित्यकार, लेखिका, कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, समाज–सेवी, समाजसुधारक, आन्दोलनधर्मी, पत्रकार, आदि सम्मिलित है। महाश्वेता देवी के लेखन की भाषा बंगला भाषा रही है और इस भाषा शैली से 20 कहानियाँ व सौ से भी अधिक उपन्यासों कि रचना लेखिका द्वारा की गई। बंगला भाषा विश्व की छठी सबसे बड़ी भाषा है पूरे विश्व में लगभग 23 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है। यह भाषा भारत में पश्चिम बंगाल उत्तरपूर्वी प्रान्तों में त्रिपुरा, असम राज्य में प्रयोग की जाती है। वर्तमान में भारतीय भाषाओं में बंगला भाषा को ऊँचा स्थान प्राप्त है। बंगला साहित्य ने भी अत्यन्त समृद्धि पाई। महाश्वेता देवी ने कम उम्र में बंगला भाषा में लेखन का कार्य शुरू किया। 'झाँसी की रानी' यह रचना उनके साहित्य कैरियर की शुरूआत थी, जो सन् 1956 में प्रकाशित इनकी सभी मूल रचनाओं के काल्पनिक पात्र हमारे देश के दीन–हीन समुदाय के बहुत करीब हैं और उपन्यास 'नाती' सन् 1957 में प्रकाशित होने के बाद स्वयं कहती हैः

"इसको लिखने के बाद मैं समझ पाई कि मैं कथाकार बनूँगी।"

महाश्वेता देवी जो एक महान रचनाकार हैं उन्होंने, अपनी रचनाओं में विचारों, सिद्धान्तों व सामाजिक ज्वलंत समस्याओं को समय और व्यवहार की कसौटी पर कसा। जो सिद्धान्त उन्हें जनता से ज्यादा निकट वैज्ञानिक और प्रगतिशील लगे, उसे अपनी रचना संसार का आधार बनाया। यह महान महिला लेखिका केवल बंगाल तक ही सीमित नहीं है बल्कि पूरे देश व अन्तर्राष्ट्रीय साहित्कार के रूप में पढ़ी व सुनी जाने लगी। इनकी भाषा मूल रूप से बंगला रही है। महाश्वेता देवी बंगला तक सीमित न हो कर, उनके द्वारा रचित रचनाओं में संदेश एवं महत्व होने के कारण अन्य भाषाओं में भी पढ़ी गई है। ऐसा अनुवाद के कारण ही संभव हो सका। उनकी रचनाओं से आमजनों ने ज्ञान प्राप्त किया एवं उनसे शिक्षित एवं प्रेरित होकर कई आन्दोलन भी हुए।

महाश्वेता देवी की रचनाओं में अक्लांत कौरव, अग्निगर्भ, अमृत संचय, आदिवासी कथा, ईंट के ऊपर ईंट, उम्रकैद, कृष्ण द्वादशी, ग्राम बांग्ला, घहराती घटाएँ, चोट्टिमुंडा और उसका तीर, जंगल के दावेदार, जकड़न, जली थी अग्निशिखा, झाँसी की रानी, टेरोडैक्टिल, दौलती, बनिया बहू, मर्डरर की माँ, मातृ छवि, मास्टर साब, नीलू के लिए, रिपोर्टर, श्री श्री गणेश महिमा, स्त्री पर्व, स्वाहा और हीरो–एक ब्लू प्रिंट आदि बांग्ला से हिन्दी में अनुदित रचनाएं हैं। इन सभी रचनाओं का बांग्ला से हिन्दी मे अनुवाद हो चुका है। महाश्वेता देवी द्वारा लिखी गई मूल रचनाओं, कहानियों, उपन्यासों,सम्पूर्ण भारत वर्ष के बुद्धजीवी वर्ग ने महसूस किया। अलग–अलग जाति समुदाय वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले, इस देश के गरीबों, आदिवासियों, दलितों के लिए सोच रखने वाले प्रत्येक भाषा–भाषी साहित्यकार ने महाश्वेता देवी की रचनाओं का गहन अध्ययन करने के बाद इन रचनाओं को प्रत्येक वर्ग में पहुँचाने का बीड़ा उठाया।

महाश्वेता देवी के साहित्य में समाहित ज्ञान केवल देश तक ही सीमित नहीं रहा। अध्ययनशील समाज में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अनेक भाषाओं में प्रकाशित किया गया। उनकी कहानी 'ऑपरेशन बसाई टुडु' इतालवी और फ्रेंच भाषा मे भी अनुवादित है। बंगला भाषा में लिखी गई झांसी की रानी,उपन्यास का अंग्रेजी में अनुवाद सागरी और मंदिरा सेन गुप्ता द्वारा किया गया। तेलगू में श्री श्री गणेश महिमा 1084 की माँ, गीता रंगस्वामी द्वारा अनुवादित है। अनन्त महापात्रा द्वारा उड़िया भाषा में एवं गुजराती भाषा में सुकन्या जवेरी द्वारा 'अरण्येर अधिकार' का अनुवाद किया गया है। मराठी में उनके कई उपन्यास एवं गायत्री चक्रवर्ती द्वारा भी अंग्रेजी में कहानियों का अनुवाद किया गया है। शमीक बंधोपाध्याय द्वारा भी अंग्रेजी में नाटकों का अनुवाद किया गया है। साथ ही 1084 की माँ, उर्वशी, बायन आदि शामिल है। यह रचनाएं 1986 से 1997 के मध्य रची गई। गायत्री चक्रवर्ती और शमीक बंधोपाध्याय द्वारा

अंग्रेजी के 'ऑपरेशन बासई टुडु' और 'द्रोपदी' इन दो प्रसिद्ध कहानियों का अनुवाद किया गया ।

कन्नड़ भाषा में द्रोपदी, स्तन दायनी, मकर शवर नामक श्रीमती एच.एस द्वारा अनुवादित है, जिसका प्रकाशन सन् 1996 में बेली चुक्की प्रकाशन द्वारा किया गया। हजार चौरासी की माँ एवं रूदाली उपन्यास का प्रकाशन श्रीमती एच.एस. द्वारा प्रकाशित है और कर्नाटक साहित्य अकादमी 1998 में इस रचनात्मक कार्य के लिए उन्हें सबसें अच्छे अनुवाद के रूप में पहला स्थान दिया गया है। कुलपुत्र, बेटे हंट, दौलती, पैटरोडेटिकल वर्ष 2006 में श्रीमति एच. एस द्वारा अनुवादित है। उनकी आदिवासी पत्रिका बोर्तिका में लिखित कई बंगाली रचनाओं का अंग्रेजी भाषा में सम्पादन मैत्रीय घटक द्वारा 1989 में किया गया। 'क्यों–क्यों लड़की' रचना का अनुवाद हिन्दी, मलयालम, कन्नड़, गुजराती,अंग्रेजी, मराठी में उपलब्ध है। तमिल में गिरीश कर्नाडा द्वारा भी अनुवादित साहित्य है।

इनकी रचनाएं हमेशा से ही समाज को प्रेरित करती रही। जिसके कारण बंगला भाषा में रचित मूल कृतियाँ अपनी सीमाओं से बाहर आकर अन्य भाषाओं में अनुदित होकर पढ़ी जा रही है। उनकी मूल रचना केवल एक भाषा तक सीमित नहीं रही बल्कि इनकी रचनाओं का निकलने वाला प्रकाश दूर तक अंधेरो को चिरता हुआ सामने आने लगा। देश की करीब एक दर्जन भाषाओं में अनुदित उपन्यास, कहानियाँ एवं रचनाएं पढ़ी जाती है। इनकी रचनाओं में शोषित, आदिवासी, दलित, मजदूरो, गरीबों, महिलाओं के साथ प्रति दिन होने वाले अन्याय के खिलाफ यथार्थ चित्रण झलकता है। इसी को समझने के बाद भारत के प्रीन्टमीडिया जगत् ने इस साहित्यकार, विचारक द्वारा आदिवासियों के साथ रहकर किये गये अनुभवों को देश के जन मानस तक पहुँचाने का कार्य किया।

निष्कर्ष

इनकी रचनाओं पर आधारित नई कृतियाँ एवं फिल्मों को भी सराहा गया। देश के फिल्म जगत् नेमहिला उत्पीड़न पर लेखिका द्वारा रचित उपन्यास 'हजार चौरासी की माँ' एवं 'रूदालीं से प्रभावित होकर दो फिल्मों का निर्माण किया। इन फिल्मों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त हुई है। महिला उत्पीड़न पर आधारित इस फिल्म में मुख्य किरदार निभाने वाली व अदाकारा डिपल कपाड़िया तथा 'हजार चौरासी की माँ' फिल्म की अभिनेत्री जया बच्चन को सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री केरूप में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

लेखिका द्वारा रचित साहित्य विशाल दर्पण की भांति है। अनुवाद ही वह माध्यम है जो उनके साहित्य को जन–जन तक पहुंचाने एवं परिचित करने से सफल हुआ। अनुवाद के माध्यम से लेखिका द्वारा रचित साहित्य को देश एवं विदेश जान एवं समझ सका है। अनुवाद भाषा कि वह महत्वपूर्ण कड़ी है। यदि वह ज्ञान या साहित्य के लिए सागर है तो अनुवाद उस सागर में उठने वाली लहर के समान है।

संदर्भ सूची

1. माहेश्वर, (1993) *महाश्वेता देवी की श्रेष्ठ कहानियां,* नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली।
2. महाश्वेता देवी, (2003) *भारत वर्ष तथा अन्य कहानियां,* आधार प्रकाशन, हरियाणा।
3. चतुर्वेदी, जगदीश्वर, सिंह, सुधा, (2004) *स्त्री अस्मिता साहित्य और विचारधारा,* कोलकत्ता।

****